चंडी दी वार

੧ ओं (ओअंकार) वाहिगुरू जी की फ़तह ॥

॥ स्री भगउती जी सहाइ॥ वार स्री भगउती जी की ॥ पातिसाही 10॥

प्रिथम भगउती सिमर कै गुर नानक लई धिआइ।
फिर अंगद गुर ते अमरदास रामदासै होइ सहाइ।
अरजन हरिगोबिंद नूं सिमरौ स्री हरिराइ।
स्री हरिक्रिसन धिआइऐ जिसु डिठे सभ दुख जाइ।
तेगबहादर सिमरिऐ घर नउनिधि आवै धाइ।
सभ थाई होइ सहाइ ॥1॥

॥ पउड़ी ॥

खंडा प्रिथमै साजिकै जिन सभ सैसारु उपाइआ।
ब्रहमा बिसन महेस साजि कुदरति दा खेलु रचाइ बणाइआ।
सिंध परबत मेदनी बिनु थंम्हा गगनि रहाइआ।
सिरजे दानो देवते तिन अंदरि बादु रचाइआ।
तै ही दुरगा साजि कै दैता दा नासु कराइआ।
तैथो ही बलु राम लै नाल बाणा दहसिरु घाइआ।
तैथों ही बलु क्रिसन लै कंसु केसी पकड़ि गिराइआ।
बडे बडे मुनि देवते कई जुग तिनी तनु ताइआ।
किनी तेरा अंतु न पाइआ ॥2॥

साधू सतिजुगु बीतिआ अधसीली त्रेता आइआ।
नची कल सरोसरी कल नारद डउरू वाइआ।
जीति लए तिन देवते तिहु लोकी राजु कमाइआ।
बडा बीरु अखाइ कै सिर उपर छत्रु फिराइआ।
दिता इंद्रु निकाल कै तिन गिर कैलास तकाइआ।
डरि के हथो दानवी दिल अंदरि त्रासु वधाइआ।
पास दुरगा दे इंद्रु आइआ ॥3॥

੧ ओं (ओअंकार) वाहिगुरू जी की फ़तह ॥

वार श्री भगवती जी (चंडी दी वार)

॥ श्री भगवती जी सहायक हों ॥ वार श्री भगवती जी की ॥ पातिशाही 10॥

पहले खड्ग का स्मरण कर फिर गुरु नानक को याद करता हूँ। पुनः अंगद, अमरदास एवं गुरु रामदास का स्मरण करता हूँ, जो मेरे सहायक होंगे। गुरु अरजन, हरगोबिन्द को स्मरण कर श्री हरिराय को याद करता हूँ। श्री हरिकृष्ण, जिनको देखने से सर्वदुःखों की निवृत्ति हो जाती है, का ध्यान करता हूँ। (गुरु) तेगबहादुर का स्मरण करने से नवनिधियाँ घर की ओर दौड़ी चली आती हैं और ये (गुरु) सर्व स्थानों पर मेरे सहायक होते हैं ॥1॥

॥ पउड़ी ॥

परमात्मा ने सर्वप्रथम खड्गरूपी शक्ति का सृजन कर फिर संसार उत्पन्न किया तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश को उत्पन्न कर सारी प्रकृति का खेल रचा (बना डाला)। समुद्र, पर्वत, धरती एवं बिना स्तंभों के रुका रहनेवाला आकाश बनाया गया। दानव एवं देवता पैदा किए और उनमें परस्पर शत्रुता पैदा की। हे प्रभु ! तमने ही दुर्गा का सृजन कर उसके हाथों से दैत्यों का नाश करवाया। तुमसे ही बल प्राप्त कर राम ने अपने बाणों से रावण का वध किया और तुम्हीं से बल लेकर कृष्ण ने कंस के केशों को पकड़कर उसे नीचे गिरा दिया। हे परमतत्त्व ! बड़े-बड़े मुनिगण एवं देवता कई युगों तक घोर तप करने के बाद भी तेरा अन्त न पा सके ॥2॥

तत्त्व गुणवाला सतयुग बीता और आधे शील का पालन करनेवाला त्रेतायुग आया। अब सबके सर पर कलह नाचने लगा, क्योंकि नारद का प्रभाव बहुत बढ़ गया। देवताओं का अहंकार नष्ट करने के लिए परमात्मा ने महिषासुर एवं शुंभ आदि असुरों को पैदा किया, जिन्होंने देवताओं को जीतकर त्रिलोक में अपना राज्य स्थापित किया। ये अपने को महाबली कहलाने लगे और इन्होंने छत्र को अपने सिर पर धारण किया। इन्होंने इन्द्र को सुरपुरी से निकाल फेंका और उसने कैलास पर्वत की ओर याचक दृष्टि से देखना प्रारंभ कर दिया। दानवों से डरा हुआ इन्द्र बहुत भयभीत होकर दुर्गा के पास आया ॥3॥

॥ पउड़ी ॥

इक दिहाड़े न्हावण आई दुरगसाह।
इंदर ब्रिथा सुणाई अपणे हाल दी।
छीन लई ठकुराई साते दानवी।
लोकी तिही फिराई दोही आपणी।
बैठे वाइ वधाई ते अमरावती।
दिते देव भजाई सभना राकसाँ।
किनै न जिता जाई महखे दैत नूं।
तेरी साम तकाई देवी दुरगसाह॥4॥

॥ पउड़ी ॥

दुरगा बैण सुणंदी हसी हड़हड़ाइ।
ओही सीहु मंगाइआ राखस भखणा।
चिंता करहु न काई देवाँ नूं आखिआ।
रोह होई महा माई राकसि मारणे ॥5॥

॥ दोहरा ॥

राकसि आए रोहले खेत भिड़न के चाइ।
लसकन तेगां बरछीआँ सूरजु नदरि न पाइ॥6॥

॥ पउड़ी ॥

दुहाँ कँधाराँ मुहि जुड़े ढोल संख नगारे बजे।
राकसि आए रोहले तरवारी बखतर सजे।
जुटे सउहे जुध नूं इक जात न जाणन भजे।
खेत अंदरि जोधे गजे ॥7॥

॥ पउड़ी ॥

एक दिन जब दुर्गा स्नान करने आई तो इंद्र ने अपनी व्यथा सुनाते हुए कहा कि दानवों ने मेरा राज्य छीन लिया है और अब त्रिलोक में उनकी घोषणाओं को सुना जाता है। उन्होंने वाद्य बजाकर स्वर्गपुरी से सब देवताओं को भगा दिया है। कोई भी महिषासुर को जीत नहीं पाया है, इसलिए हे देवी दुर्गा ! मैं तेरा शरणागत हुआ हूँ ॥4॥

॥ पउड़ी ॥

बातें सुनती हुई दुर्गा अट्टहास कर उठी और उसने राक्षसों का भक्षण करनेवाला अपना सिंह मँगवाया। उसने देवताओं से कहा कि तुम चिंता त्याग दो। यह कहते हुए दुर्गा असुरों का वध करने के लिए क्रोधित हो उठी ॥5॥

॥ दोहा ॥

बलशाली राक्षस युद्ध के उत्साह से आगे चले और युद्धस्थल में कृपाण एवं बरछियाँ इस प्रकार चमकने लगीं कि सूर्य भी दिखाई नहीं पड़ रहा था ॥6॥

॥ पउड़ी ॥

दोनों दल आमने-सामने खड़े हो गए और शंख तथा नगाड़े बजने लगे। लौह-कवचों एवं कृपाणों से सुसज्जित बलशाली राक्षस आगे बढ़े। सम्मुख युद्ध के लिए ऐसे योद्धा खड़े हैं, जो युद्धस्थल से भागना जानते ही नहीं। ये योद्धा युद्धक्षेत्र में गरज रहे हैं ॥7॥

॥ पउड़ी ॥

जंग मुसाफा बजिआ रण घुरे नगारे चावले।
झूलन नेजे बैरका नीसाण लसनि लसावले।
ढोल नगारे पउण दे ऊँघण जाण जटावले।
दुरगा दानो डहे रण नाद वजन खेत भीहावले।
बीर परोते बरछीएँ जण डाल चमुटे आवले।
इक वढे तेगी तड़फीअन मद पीते लोटनि बावले।
इक चुण चुण झाड़उ कढीअन रेत विचों सुइना डावले।
गदा त्रिसूलां बरछीआँ तीर वगन खरे उतावले।
जण डसे भुजंगम सावले। मर जावन बीर रुहावले ॥8॥

॥ पउड़ी ॥

देखन चंड प्रचंड नूं रण घुरे नगारे।
धाए राकसि रोहले चउगिरदे भारे।
हथीं तेगां पकड़ि कै रण भिड़े करारे।
कदे न नठे जुध ते जोधे जुझारे।
दिल विच रोह बढाइ कै मारि मारि पुकारे।
मारे चंड प्रचंड नै बीर खेत उतारे।
मारे जापन बिजुली सिर भार मुनारे ॥9॥

॥ पउड़ी ॥

चोट पई दमामे दलां मुकाबला।
देवी दसत नचाई सीहणि सार दी।
पेट मलंदे लाई महखे दैत नूं।
गुरदे आँदाँ खाई नाले रुकड़े।
जेही दिल विच आई कही सुणाइकै।
चोटी जाण दिखाई तारे धूमकेत ॥10॥

॥ पउड़ी ॥

रणभेरी बज उठी और नगाड़े गड़गड़ाने लगे। बरछियाँ झूल उठीं और सुन्दर ध्वज फहरा उठे। ढोल-नगाड़ों की ध्वनि से शूरवीर इस प्रकार मस्त हो रहे हैं, जैसे कोई शराबी झूम रहा हो। दुर्गा एवं दानव इस भयानक नाद में एक-दूसरे के सामने होकर लड़े रहे हैं। युद्ध में वीर बरछियों में इस प्रकार पिरोये जा रहे हैं, मानो डाली में आँवले लगे हुए हों। एक ओर कृपाणों से कटे वीर तड़प रहे हैं और दूसरी ओर वीर धरती पर ऐसे लोट रहे हैं, मानो उन्होंने मद्यपान किया हो। कायरों को झाड़ियों में से खींचकर इस प्रकार मारा जा रहा है, जैसे रेत में से सोने को खींचकर अलग कर लिया जाता हो। गदा, त्रिशूल, बरछियाँ, और तीर भीषण रूप से चल रहे हैं और ये काले नागों की तरह डंसते चले जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप बड़े-बड़े शूरवीर मरते जा रहे हैं ॥8॥

॥ पउड़ी ॥

प्रचंड चंडिका का सामना करने के लिए दैत्यों के नगाड़े और तेज ध्वनि करने लगे और महाबली राक्षसों ने दौड़कर चंडी को चारों ओर से घेर लिया। वे हाथों से कृपाण पकड़कर भिड़ गए हैं। ये ऐसे वीर हैं, जो कभी भी रणस्थल से पीछे नहीं हटे हैं। अत्यन्त क्रोधित होकर ये मार, मार की ध्वनि कर रहे हैं। प्रचंड चंडी ने अनेकों वीरों को रणस्थल में ऐसे मार गिराया है, मानो बिजली पड़ने के कारण बड़ी-बड़ी मीनारें नीचे जमीन पर आ गिरी हों ॥9॥

॥ पउड़ी ॥

नगाड़ों पर चोटें पड़ रही हैं और दलों में मुक़ाबला चल रहा है। देवी ने सिंहनी जैसी कृपाण को हाथ में नचाया है और पेट को मल रहे महिषासुर पर वार किया। देवी की कृपाण दैत्य के पेट को खंड-खंड करती हुई उसकी अँतड़ियों एवं गुर्दों को बाहर खींच लायी है। तलवार की नोक दूसरी ओर ऐसे निकली है, मानो धूमकेतु की चोटी दिखाई दे रही हो। कवि कहता है कि यह उपमा जैसी मुझे अच्छी लगी है, मैंने कह सुनाई है ॥10॥

॥ पउड़ी ॥

चोटां पवन नगारे अणीआं जुटीआँ।
धूह लईआँ तरवारी देवाँ दानवी।
वाहन वारो वारी सूरे संघरे।
वगै रतु झुलारी जिउँ गेरू बसतरा।
देखन बैठ अटारी नारी राकसाँ।
पाई धूम सवारी दुरगा दानवी ॥11॥

॥ पउड़ी ॥

लख नगारे वजण आमो साम्हणे।
राकस रणो न भजण रोहे रोहले।
सीहाँ वाँगू गजण सभे सूरमे।
तणि तणि कैबर छडण दुरगा साम्हणे ॥12॥

॥ पउड़ी ॥

घुरे नगारे दोहरे रण संगलीआले।
धूड़ि लपेटे धूहरे सिरदार जटाले।
उखलिआँ नासाँ जिना मुहि जापन आले।
धाए देवी साहमणे बीर मुछलीआले।
सुरपत जेहे लड़ हटे बीर टले न टाले।
गजे दुरगा घेरि कै जणु घणीअर काले ॥13॥

॥ पउड़ी ॥

चोट पई खरचामी दलाँ मुकाबला।
घेर लई वरिआमी दुरगा आइ कै।
राकस बडे अलामी भज न जाणदे।
अंत होए सुरगामी मारे देवता ॥14॥

॥ पउड़ी ॥

नगाड़े पर चोटें पड़ रही हैं और सेनाएँ एक-दूसरे से भिड़ गई हैं। देव और दानवों ने तलवारें खींचकर अपने-अपने दाँव लगाकर चलाना शुरू कर दिया है। जैसे कपड़े से कच्चा रंग उतर कर बह उठता है, वैसे रक्त शरीर रूपी कच्चे वस्त्र से बह निकला है, जिसे राक्षसों की स्त्रियाँ अट्टालिकाओं पर बैठकर देख रही हैं। दानवों में दुर्गा की सवारी की धूम मच गई है ॥11॥

॥ पउड़ी ॥

बेशक भयंकर नगाड़े लाखों बार बज रहे हैं, परन्तु महाबली राक्षस युद्ध से भाग नहीं रहे हैं। शेरों की तरह शूरवीर गरज रहे हैं और दुर्गा के सामने तन-तनकर तीर छोड़ रहे हैं ॥12॥

॥ पउड़ी ॥

ज़ंजीरों से बाँधे हुए नगाड़े बज रहे हैं और धूल से लिपटे जटाओं वाले असुर दिखाई पड़ रहे हैं। इन राक्षसों के नाक के छिद्र ओखलियों के समान हैं और मुँह दीवारों में अलमारियों, के समान बड़े-बड़े हैं। दौड़कर दुर्गा के सामने आए मूंछोंवाले ये वीर सुरपति से लड़कर भी अटल बने रहनेवाले वीर हैं; इन्होंने दुर्गा को घेरकर इस प्रकार गर्जन आरम्भ कर दिया मानो बादल गरज रहे हों ॥13॥

॥ पउड़ी ॥

खर के चमड़े से बने नगाड़ों पर चोट पड़ गई और दलों का मुक़ाबला चल रहा है। राक्षसों ने बलशालिनी दुर्गा को घेर लिया है और ये बलशाली ऐसे राक्षस हैं जो युद्धस्थल से भाग जाना तो जानते ही नहीं। ये कई देवताओं को नष्ट करके अन्त में स्वयं भी स्वर्ग सिधार गए॥14॥

॥ पउड़ी ॥

अगणत घुरे नगारे दलाँ भिड़ंदिआँ।
पाए महखल भारे देवाँ दानवाँ।
वाहन फट करारे राकसि रोहले।
जापन तेगीआरे मिआनो धूहीआँ।
जोधे बड़े मुनारे जापन खेत विचि।
देवी आप सवारे पब जवेहणे।
कदे न आखण हारे धावन साम्हणे।
दुरगा सभ संघारे राकसि खड़ग लै ॥15॥

॥ पउड़ी ॥

उमल लथे जोधे मारू वजिआ।
बदल जिउँ महिखासुर रण विचि गजिआ।
इंदर जेहा जोधा मैंथउ भजिआ।
कउणु विचारी दुरगा जिन रणु सजिआ ॥16॥

॥ पउड़ी ॥

बजे ढोल नगारे दलाँ मुकाबला।
तीर फिरै रैबारे आम्हो साम्हणे।
अगणत बीर सँघारे लगदी कैबरी।
डिगे जाणि मुनारे मारे बिजु दे।
खुली वाली दैत अहाड़े सभे सूरमे।
सुते जान जटाले भंगाँ खाइकै ॥17॥

॥ पउड़ी ॥

दुहाँ कँधाराँ मुहि जुड़े नालि धउसा भारी।
कड़क उठिआ फउज ते वडा अहंकारी।
लै कै चलिआ सूरमे नालि वडे हजारी।
मिआनो खंडा धूहिआ महखासुर भारी।
उमल लथे सूरमे मार मची करारी।
जापे चले रत दे सलले जटधारी ॥18॥

॥ पउड़ी ॥

दलों के भिड़ते ही नगाड़े घड़घड़ाने लगे। देवताओं, दानवों दोनों ने भारी कवच धारण कर रखे थे। राक्षस भीषण प्रहार कर रहे हैं। उनकी म्यानों से निकाली हुई तलवारें आरे के समान लग रही हैं। योद्धा, युद्धस्थल में बड़े-बड़े स्तम्भों की तरह लग रहे हैं। देवी ने इन पर्वतों के समान आकार वाले राक्षसों को स्वयं मार दिया, परन्तु फिर भी ये राक्षस अपनी पराजय स्वीकार नहीं करते हैं और दुर्गा के सामने दौड़-दौड़कर जा रहे हैं। दुर्गा ने अपने हाथ में खड्ग लेकर सभी राक्षसों का संहार कर दिया ॥15॥

॥ पउड़ी ॥

उमड़-घुमड़कर योद्धागण भिड़ गए और मारो, मारो की ध्वनि गूँज उठी। इसी समय बादलों के समान महिषासुर युद्धस्थल में गरजा और बोला कि इंद्र-जैसा वीर भी युद्धस्थल में मेरे सामने से भाग खड़ा हुआ था। यह कौन बेचारी दुर्गा है, जिसने युद्ध करने की हिम्मत की है ॥16॥

॥ पउड़ी ॥

ढोल-नगाड़ों की ध्वनि के बीच दलों का मुक़ाबला शुरू हो गया और दोनों दलों के बीच बाण बरसने लगे। तीरों के लगते ही अगणित वीरों का संहार हुआ और वे ऐसे गिरने लगे, जैसे बिजली पड़ने से स्तम्भ ढहकर गिर जाते हैं। खुले केशों वाले राक्षस वीर युद्धस्थल में ऐसे पड़े हैं, मानो भंग पीकर जटाओं वाले मुनि लेटे हों ॥17॥

॥ पउड़ी ॥

नगाड़ों की घनघोर ध्वनि के साथ दोनों दल आमने-सामने भिड़ गए। अपनी सेना से भी बड़ा अहंकारी (महिषासुर) कड़क उठा और हज़ारों वीरों को मारनेवाले वीरों को साथ लेकर आगे बढ़ा। महिषासुर ने अपने म्यान से भारी खड्ग को खींच लिया और उसके ऐसा करते ही शूरवीर इकट्ठा होकर मारकाट मचाते हुए टूट पड़े। रक्त इस प्रकार बह निकला, मानो शिव की जटाओं से जलधारा बह निकली हो ॥18॥

॥ पउड़ी ॥

सट पई जमधाणी दलाँ मुकाबला।
धूहि लई क्रिपाणी दुरगा मयान ते।
चंडी राकसि खाणी वाही दैत नूं।
कोपर चूर चवाणी लथी करग लै।
पाखर तुरा पलाणी रड़की धौल जाइ।
लैदी अघा सिधाणी सिंगाँ धउलदिआँ।
कूरम सिर लहिलाणी दुसमन मारकै।
वढे गन तिखाणी मूए खेत विचि।
रण विच धती धाणी लोहू मिझ दी।
चारे जुग कहाणी चलग तेग दी।
बिधण खेत विहाणी महखे दैत नूं ॥19॥

॥ पउड़ी ॥

इती महखासर दैत मारे दुरगा आइआ।
चउदह लोका राणी सिंधु नचाइआ।
मारे वीर जटाणी दल विच अगले।
मंगण नाही पाएणी दली हँघारकै।
जण करी समाइ पठाणी सुणि कै राग नूं।
रतू दे हड़वाणी चले बीर खेत।
पीता फुलु इआणी घूमन सूरमे ॥20॥

॥ पउड़ी ॥

होई अलोपु भवानी देवाँ नूं राजु दे।
ईसर दी बरदानी होई जित दिन।
सुंभ निसुंभ गुमानी जनमे सूरमे।
इंदर दी रजधानी तकी जितणी ॥21॥

॥ पउड़ी ॥

यम के वाहन भैंसे की ख़ाल से बने नगाड़े पर चोट पड़ी और संघर्ष शुरू हो गया। दुर्गा ने राक्षसों को मारकर खानेवाली कृपाण से महिषासुर पर वार किया। दुर्गा की तलवार राक्षस महिषासुर की खोपड़ी को काटती, मुख एवं शरीर को चीरती, वाहन की काठी को खंड़-खंड करती हुई, धरती को छेदती हुई, धरती को उठानेवाले बैल के के सींगों से जा टकरायी। तलवार और आगे बढ़कर कच्छप की पीठ पर जा टकरायी। दुश्मनों को ऐसे काटकर डाल दिया गया, जैसे बढ़ई ने जंगल में लकड़ी के टुकड़े काटकर फेंके हों। रक्त और मेधा (चर्बी) का कीचड़ युद्धस्थल में भर गया। देवी की कृपाण की यशगाथा चारों युगों तक चलती रहेगी। वह अवसर महिषासुर दैत्य के लिए एक कठिन समय था ॥19॥

॥ पउड़ी ॥

महिषासुर दैत्य को मारकर दुर्गा इधर आइ और उसने चौदह भुवनों में अपना सिंह नचाया। दल के अगले भीषण वीरों को मार दिया गया। वीर पानी माँगे बिना मर रहे हैं और ऐसे मस्त हो रहे हैं, जैसे पठान राग को सुनकर मस्ती में झूमते हैं। रक्त की बाढ़ रणस्थल में चल निकली है और सूरमा युद्धस्थल में ऐसे मस्त घूम रहे हैं, मानो उन्होंने मद्यपान कर रखा हो ॥20॥

॥ पउड़ी ॥

देवताओं को राज देकर भवानी लोप हो गई। इधर शिव के वरदान से शुंभ और निशुंभ दो अभिमानी शूरवीर राक्षस पैदा हो गए, जिन्होंने इंद्र की राजधानी जीतने की योजना बनाई ॥21॥

॥ पउड़ी ॥

इंद्रपुरी ते धावणा वडजोधी मता पकाइआ।
संज पटेला पाखरा भेड़ संदा साज बणाइआ।
जुंमे कटक अछूहणी असमानु गरदी छाइआ।
रोह सुंभ निसुंभ सिधाइआ ॥22॥

॥ पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ अलाइआ वडजोधी संघरवाए।
रोह दिखाली दितीआ वरिआमी तुरे नचाए।
घुरे दमामे दोहरे जम बाहन जिउँ अरड़ाए।
देउ दानो लुझण आए॥23॥

॥ पउड़ी ॥

दानो देउ अनागी संघरु रचिआ।
फुल खिड़े जण बागी बाणे जोधिआ।
भूता इलाँ कागी गोसत भखिआ।
हुमड़ घुमड़ जागी घती सूरिआ ॥24॥

॥ पउड़ी ॥

सट पई नगारे दलाँ मुकाबला।
दिते देउ भजाई मिलि कै राकसी।
लोकी तिही फिराई दोही आपणी।
दुरगा दी साम तकाई देवाँ डरदिआँ।
आँदी चंडि चढ़ाई उते राकसाँ ॥25॥

॥ पउड़ी ॥

आई फेरि भवानी खबरी पाइआँ।
दैत वडे अभिमानी होए एकठे।
लोचन धूम गुमानी राइ बुलाइआ।
जग बिच वडा दानो आप कहाइआ।
सट पई खरचामी दुरगा लिआवणी ॥26॥

॥ पउड़ी ॥

योद्धाओं ने इंद्रपुरी पर धावा करने का कार्यक्रम बनाया और पेटियोंवाले लौहकवच एवं काठियाँ लेकर लड़ने के लिए अपने-आपको सुसज्जित किया। अगणित (अक्षौहिणी) दल पैदा हुआ और इस दल के चलने से उड़ी धूल आकाश में छा गई। शुंभ-निशुंभ यह सब देखकर और अधिक उत्तेजित हो उठे ॥22॥

॥ पउड़ी ॥

दोनो दैत्यों—शुंभ एवं निशुंभ ने बड़े-बड़े शूरवीरों को ललकारा है और रणस्थल में धकेल दिया है। भीषण रोष व्याप्त हो गया है और शूरवीरों ने घोड़ों को नचाना शुरू कर दिया है। नगाड़े घड़घड़ाने लगे हैं और शत्रु भैंसों की तरह चिल्लाना शुरू कर दिए हैं। युद्धस्थल में देव और दानव भिड़ने के लिए एकत्र हो गए हैं ॥23॥

॥ पउड़ी ॥

दानवों और देवों ने भीषण युद्ध प्रारम्भ कर दिया। योद्धाओं के वस्त्र ऐसे शोभायमान हैं, मानो बाग़ों में फूल खिले हों। भूत, चील और कौवों ने मांस खाना प्रारम्भ कर दिया तथा शूरवीरों ने भागदौड़ शुरू कर दी है ॥24॥

॥ पउड़ी ॥

नगाड़ों पर चोटे लगीं और मुक़ाबला शुरू हो गया। राक्षसों ने मिलकर देवताओं को भगा दिया और त्रिलोकी में अपनी विजय-घोषणा करवा दी। देवताओं ने असहाय एवं भयभीत होकर दुर्गा की शरण ली और उसे राक्षसों पर चढ़ाई करने के लिए ले आए॥25॥

॥ पउड़ी ॥

समाचार पाकर भवानी आई और बड़े-बड़े अभिमानी दैत्य इकट्ठे हो गए। शुंभ राजा ने धूम्रलोचन नामक दैत्य को बुलाया जो कि संसार में बहुत बड़ा माना जाता था। दैत्यों की ओर भी नगाड़े पर चोट पड़ गई कि दुर्गा को लेकर आना है ॥26॥

॥ पउड़ी ॥

कड़क उठी रण चंडी फउजाँ देखिकै।
धूहि मिआनो खंडा होई साहमणे।
सभे बीर सँघारे धूमरनैण दे।
जणि लै कटे आरे दरखत बाढीआँ ॥27॥

॥ पउड़ी ॥

चोबी धउस बजाई दलाँ मुकाबला।
रोह भवानी आई उत्तै राकसाँ।
खबै दसत नचाई सीहण सार दी।
बहुतिआँ दे तन लाई कीती रंगुली।
भाईआँ मारन भाई दुरगा जाणिकै।
रोह होइ चलाई राकसि राइ नूं।
जमपुर दिआ पठाई लोचन धूम नूं।
जापे दिती साई मा़रन सुंभ दी ॥28॥

॥ पउड़ी ॥

भनै दैत पुकारे राजे सुंभ थै।
लोचन धूम सँघारे सणै सिपाहीआँ।
चुणि चुणि जोधे मारे अंदर खेत दै।
जापन अंबरि तारे डिगनि सूरमे।
गिरे परबत भारे मारे बिजु दे।
दैताँ दे दल हारे दहसत खाइकै।
बचे सु मारे मारे रहदे राइ थै ॥29॥

॥ पउड़ी ॥

सेना को देखकर रणचंडी कड़क उठी और म्यान से खड़ग खींचकर सामने आ गई। उसने धूम्रलोचन के सभी वीरों को ऐसे मार गिराया, जैसे बढ़इयों ने आरों से पेड़ों को काटकर फेंक दिया हो ॥27॥

॥ पउड़ी ॥

नगाड़ों की चोट के साथ दलों में मुक़ाबला शुरू हो गया और क्रोधित होकर भवानी राक्षसों पर टूट पड़ी। देवी ने लौह-देवी को अपने हाथों पर नचाया, उसे बहुतों के शरीरों में घुसेड़ा और रक्त-रंजित कर दिया। युद्ध की भगदड़ में राक्षस, राक्षसों को ही दुर्गा समझकर मार डाल रहे हैं। दुर्गा ने क्रोधित होकर राक्षसराज धूम्रलोचन पर कृपाण चलाई और उसे यमपुरी पहुँचा दिया। धूम्रलोचन को मारना ऐसा लगा मानो उसे मारकर दुर्गा ने शुंभ को मारने का अग्रिम दिया हो ॥28॥

॥ पउड़ी ॥

प्रताड़ित दैत्य राजा शुंभ के पास जाकर पुकारने लगे कि धूम्रलोचन को सिपाहियों समेत मार डाला गया है और चुन-चुनकर योद्धाओं को रणस्थल में मार डाला गया है। शूरवीर ऐसे गिरते थे जैसे आकाश से तारे टूटकर गिर रहे हों या फिर ऐसा लगता था कि बिजली पड़ने से पर्वत गिर पड़े हों। दैत्यों के दल भयभीत होकर हार गये और जो बचे-खुचे थे, उनको भी (देवी द्वारा) मार डाला गया है ॥29॥

॥ पउड़ी ॥

रोह होइ बुलाए राकसि राइ ने।
बैठे मता पकाए दुरगा लिआवणी।
चंड अर मुंड पठाए बहुता कटकु दै।
जापे छपर छाए बणीआ के जमा।
जेते राइ बुलाए चले जुध नो।
जण जमपुर पकड़ चलाए सभे मारने ॥30॥

॥ पउड़ी ॥

ढोल नगारे वाए दलाँ मुकाबला।
रोह रुहेले आए उते राकसाँ।
सभनी तुरे नचाए बरछे पकड़ि कै।
बहुते मार गिराए अंदर खेत दै।
तीरी छहबर लाए बुठी देवता ॥31॥

॥ पउड़ी ॥

भेरी संख वजाए संघरि रचिआ।
तणि तणि तीर चलाए दुरगा धनख लै।
जिनी दसत उठाए रहे न जीवदे।
चंड अरु मुंड खपाए दोनो देवता ॥32॥

॥ पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ रिसाए मारे दैत सुण।
जोधे सभ बुलाए अपणे मजलसी।
जिनी देउ भजाए इंदर जेहवे।
तेई मार गिराए पल विच देवता।
ओनी दसती दसति वजाए तिंना चित करि।
फिर स्रणवतबीज चलाए बीड़े राइ दे।

॥ पउड़ी ॥

राक्षसराज ने क्रोधित होकर अपने वीरों को बुलाया और यह निर्णय किया कि दुर्गा को पकड़कर लाना है। चंड और मुंड को वहाँ से बहुत-सी सेना के साथ भेजा और उसकी चतुरंगिणी सेना से ऐसा लगता था मानो आकाश ढक गया हो। जितने भी राजाओं को शुंभ ने बुलाया था, वे सभी युद्ध के लिए चल दिये और ऐसे लग रहे थे मानो इन्हें स्वयं मरने के लिए भेजा जा रहा है ॥30॥

॥ पउड़ी ॥

ढोल-नगाड़ों की गूँज के साथ मुक़ाबला शुरू हो गया। राक्षसों पर भी क्रोधित वीर चढ़ उठे। सबने बरछियाँ पकड़कर घोड़ों को नचाना शुरू कर दिया। बहुतों को, देवताओं की बाण-वर्षा में मार गिराया गया ॥31॥

॥ पउड़ी ॥

भेरी और शंख बजाकर दुर्गा ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया और तन-तनकर अपने धनुष-बाण चलाना शुरू कर दिया। जिसने भी दुर्गा के सामने हाथ उठाया, वह जीवित नहीं बचा। इस प्रकार चंड और मुंड दोनों को देवताओं की ओर से (दुर्गा ने) मार डाला ॥32॥

॥ पउड़ी ॥

दैत्यों का मारा जाना सुनकर शुंभ और निशुंभ अत्यंत क्रोधित हो उठे और उन्होंने अपने साथ उठने-बैठनेवाले उन दरबारी योद्धाओं को बुलाया, जिन्होंने इन्द्र-जैसे देवों को कई बार युद्ध में दौड़ा दिया था; ऐसे दैत्यों को पल भर में देवताओं ने मार गिराया यह जानकर उन राक्षसों ने अपने हाथ मले। अब राक्षस-राज शुंभ का भेजा हुआ रक्तबीज चला। उसके वीरों ने लौहकवच और चमकीली टोपियाँ पहन

संज पटेला पाए चिलकत टोपिआँ।
लुझण नो अरड़ाए राकस रोहले।
कदे न किनै हटाए जुध मचाइकै।
मिल तेई दानो आए हुण संघरि देखणा ॥33॥

॥ पउड़ी ॥

दैती डंड उभारी नेड़ै आइकै।
सिंघ करी असवारी दुरगा सोर सुण।
खबे दसत उभारी गदा फिराइकै।
सैना सभ संघारी स्रणवतबीज दी।
जण मद खाइ मदारी घुमन सूरमे।
अगणत पाउ पसारी रुले अहाड़ विचि।
जापै खेड खिडारी सुते फागनूँ॥34॥

॥ पउड़ी ॥

स्रणवतबीज हकारे रहदे सूरमे।
जोधे जेडु मुनारे दिसण खेत विचि।
सभनी दसत उभारे तेगाँ धूहि कै।
मारो मार पुकारे आए साम्हणे।
संजाते ठणिकारे तेगी उभरे।
घाट घड़नि ठठिआरे जाणि बणाइकै ॥35॥

॥ पउड़ी ॥

सट पई जमधाणी दलाँ मुकाबला।
घूमर बरगसताणी दल विचि घतिओ।
सुणे तुरा पलाणी डिगण सूरमे।
उठि उठि मंगणि पाणी घाइल घुमदे।
एवडु मार विहाणी उपर राकसाँ।
बिजल जिउँ झरलाणी उठी देवता ॥36॥

रखी थीं। वे सब युद्ध करने के लिए अधीर हो उठे। वे युद्ध से कभी पीछे नहीं हटनेवाले वीर थे। ये सभी दानव आगे बढ़े हैं, अब देखना है कैसा भीषण युद्ध होता है ॥33॥

॥ पउड़ी ॥

दैत्यों ने पास आकर शोर और तेज़ कर दिया तथा इधर देवी ने ध्वनि सुनकर सिंह पर सवारी की। देवी ने बायें हाथ में गदा उभारी और रक्तबीज की सब सेना का संहार कर दिया। शूरवीर मैदान में ऐसे बावले होकर घूम रहे हैं, मानो वे मद्यमान करके घूम रहे हों। युद्ध में कई पाँव पसारे पड़े हुए ऐसे लग रहे हैं जैसे खिलाड़ी होली खेलकर थककर सो गए हों ॥34॥

॥ पउड़ी ॥

बचे हुए शूरवीरों को रक्तबीज ने ललकारा। वे योद्धा युद्धस्थल में ऐसे लग रहे थे मानो मीनारें खड़ी हों। उन सबने तलवारें खींचकर हाथ ऊपर उठाए और 'मार-मार' की पुकार के साथ (देवी के) सामने आ गए। लौह-कवचों पर तलवारों की झनकार उभर पड़ी और ऐसे लग रहा था मानो ठठेरा ठोंक-ठोंककर बर्तन बना रहा हो ॥35॥

॥ पउड़ी ॥

नगाड़ों पर चोट पड़ी और युद्ध शुरू हो गया तथा सेना में भगदड़ मच गई। घोड़ों और काठियों समेत शूरवीर गिर रहे हैं और घायल कराह-कराहकर पानी माँग रहे हैं। राक्षसों पर ऐसी मार पड़ी मानो देवताओं की ओर से उठकर बिजली उन पर जा गिरी हो ॥36॥

॥ पउड़ी ॥

चोबी धउस उभारी दला मुकाबला।
सभो सैना मारी पल विचि दानवी।
दुरगा दानो मारे रोह बढाइकै।
सिर विचि तेग बगाई स्रणवतबीज दे ॥37॥

॥ पउड़ी ॥

अगणत दानो भारे होए लोहुआ।
जोधे जेडु मुनारे अंदरि खेत दै।
दुरगा नो ललकारे आवण सामणे।
दुरगा सभ संघारे राकस आँवदे।
रतू दे परनाले तिन ते भुइ पए।
उठि कारणिआरे राकस हड़हड़ाइ॥38॥

॥ पउड़ी ॥

धगा संगलीआली संघर वाइआ।
बरछी बंबलीआली सूरे संघरे।
भेड़ि मचिआ बीराली दुरगा दानवीं ।
मार मची मुहराली अंदरि खेत दै।
अण नट लथे छाली ढोलि बजाइकै।
लोहू फाथी जाली लोथी जमधड़ी।
घण विचि जिउँ छंछाली तेगां हसीआँ।
घुंमर-आरि सिआली बणिआँ केजमाँ ॥39॥

॥ पउड़ी ॥

धगा सूलि बजाईआँ दलाँ मुकाबला।
धूहि मिआनो लाईआँ जुआनी सूरमी।
स्रणवतबीज बधाइआँ अगणत सूरताँ ।
दुरगा सउहे आइआँ रोह बढाइकै।

॥ पउड़ी ॥

दलों के संघर्ष ने नगाड़ों की ध्वनि को और तेज कर दिया तथा दानवों की सेना पल भर में नष्ट हो गई। दुर्गा ने एक ओर क्रोधित होकर दानवों को मारा तथा दूसरी ओर कुपित होकर रक्तबीज के सिर पर तलवार से वार किया ॥37॥

॥ पउड़ी ॥

अगणित भारी दानव लहूलुहान हो उठे और मीनारों-जितने बड़े-बड़े असुर युद्धस्थल में आकर दुर्गा को ललकारने लगे। दुर्गा ने सामने आनेवाले सभी राक्षसों का संहार कर दिया और उनके रक्त की धाराएँ धरती पर बहने लगीं। (उसी रक्त-धारा में से) पुनः राक्षस अट्टाहस करके युद्ध के लिए उठ खड़े हुए ॥38॥

॥ पउड़ी ॥

ज़ंजीरों से बँधी हुई भेरियों की आवाज़ ने युद्ध को भीषण बना दिया और पताकाएँ लगी हुई बरछियाँ चलने लगीं। दुर्गा और दानवों की सेना का भीषण युद्ध हुआ और रणस्थल में मार-काट मच गई। वीर ऐसे उछल रहे हैं मानो नट उछलकर छलाँगें लगा रहे हों और कृपाणें ऐसे शरीरों और लौह-कवचों में फँसी पड़ी हैं मानो मछलियाँ जाल में फँसी पड़ी हों। कृपाणों की चमचमाती मुस्कराहट ऐसे लग रही है मानो सर्दी में गीदड़ चिल्ला रहे हों, अथवा वणिक् की दुकान पर सौदा लेने-देनेवालों का शोर हो ॥39॥

॥ पउड़ी ॥

बड़े नगाड़े की घड़घड़ाहट के साथ मुक़ाबला चल रहा हैं। और म्यानों से खींच-खींचकर तलवारें शूरवीरों के शरीरों पर मारी जा रही हैं। रक्तबीज ने अपनी

सभनी आन बगाइआँ तेगाँ धूहि कै।
दुरगा सभ बचाइआँ ढाल संभाल कै।
देवी आप चलाइआँ तकि तकि दानवी।
लोहू नालि डुबाइआँ तेगाँ नंगीआँ ।
सारसुती जण न्हाइआँ मिलकै देवीआँ।
सभे मार गिरइआँ अंदरि खेत दै।
तिदूँ फेरि सवाइआँ होईआँ सूरताँ ॥40॥

॥ पउड़ी ॥

सूरी संघरि रचिआ ढोल संख नगारे वाइकै।
चंड चितारी कालका मन बहला रोसु बढाइकै।
निकली मथा फोड़िकै जण फते नीसाण बजाइकै।
जाग सु जंमी जुध नूं जरवाणा जण मरड़ाइकै।
दल विचि घेरा घतिआ जन सीह तुरिआ गणिणाइकै।
आप बिसूला होइआ तिहु लोकाँ ते खुनसाइकै।
रोह सिधाईआँ चक्रपाण कर निंदा खड़ग उठाइकै।
अर्गे राको बैठे रोहले तीरी तेगी छहबर लाइकै।
पकड़ पछाड़े राकसाँ दल दैता अंदरि जाइकै।
बहु केसी पकड़ि पछाड़िअनि तिन अंदरि धूम रचाइकै।
बडे बडे चुण सूरमे गहि कोटी दए चलाइकै।
रण काली गुसा खाइकै ॥41॥

॥ पउड़ी ॥

दुहा कँधाराँ मुहि जुड़े अणिआरा चोईआँ।
धूहि क्रिपाना तिखीआँ नाल लोहू धोईआँ।
हूराँ स्रणवतबीज नूं घति घेरि खलोईआँ।
लाड़ा देखन लाड़ीआँ चउगिरदै होईआँ ॥42॥

शक्ल के अनेक दानव पैदा कर लिये और वे सभी क्रोधित होकर दुर्गा के सामने आ पहुँचे। वे तलवारों से वार करने लगे, जिन्हें दुर्गा ने अपनी ढाल संभालते हुए बचाया। दुर्गा ने रक्त में तलवारों को डुबाते हुए चुन-चुनकर दानवों पर वार किये। तलवारें ऐसी लग रही हैं मानो देवियाँ सरस्वती नदी में स्नान करने आई हों। देवी ने रक्तबीज के सभी रूपों को मार गिराया, परन्तु पुनः उससे सवा गुना अधिक सूरतें (रक्तबीज की) बन गई ॥40॥

॥ पउड़ी ॥

सूरमाओं ने ढोल, शंख और नगाड़े बजाकर युद्ध चालू रखा। चंडी ने क्रोधित हो इधर कालिका का स्मरण किया जो कि सुनिश्चित जीत के प्रतीक के रूप में चंडी का मस्तक फाड़कर प्रकट हुई। उसके पैदा होते ही युद्ध में और तेजी आ गई और दैत्य और भी कोलाहल करने लगे।(दुर्गा और कालिका ने) दल को ऐसे घेर लिया है जैसे शेर ने पशुओं को घेर लिया हो। परमात्मा स्वंय त्रिलोकी पर क्रुद्ध हो क्षुब्धचित्त हो उठा। विष्णु की सभी शक्तियाँ राक्षसों को बुरा-भला कहते देवताओं की ओर से क्रोधित होकर चल निकलीं और आगे बढ़कर उन्होंने देखा कि भयंकर राक्षस बाणों एवं कृपाणों की वर्षा बैठकर कर रहे हैं। शक्तियों ने राक्षसों के दलों में घुसकर दैत्य को पकड़ पछाड़ा। काली ने क्रोधित होकर अनेकों को केशों से पकड़-पकड़कर उठादूर दूर फेंका है ॥41॥

॥ पउड़ी ॥

दोनों सेनाएँ आमने-सामने हैं और तीरों की नाकों से रक्त चू रहा है। तेज़ कृपाणों को निकालकर दुर्गा रक्त से धो रही है। ये कृपाणें ऐसे लग रही हैं, मानो रक्तबीज को अप्सराएँ घेरकर खड़ीं हो या फिर दूल्हे को देखने के लिए स्त्रियाँ उसे घेरे खड़ी हों ॥42॥

॥ पउड़ी ॥

चोबी धउसा पाईआँ दलाँ मुकाबला।
दसती धूह नचाईआँ तेगाँ नंगीआँ।
सूरिआँ दे तन लाईआँ गोसत गिधीआँ।
बिधणराती आइआँ मरदाँ घोड़िआँ।
जोगड़ीआँ मिलि धाइआँ लोहू भखणा।
फउजा मार हटाइआँ देवाँ दानवाँ।
भजदी कथा सुणाईआँ राजे सुंभ थै।
भुईं न पउणै पाईआँ बूँदाँ रकत दीआँ।
काली खेत खपाईआँ सभे सूरताँ।
बहुती सिरी बिहाईआँ घड़ीआँ काल कीआँ।
जाणि न जाए माईआँ जूझे सूरमे ॥43॥

॥ पउड़ी ॥

सुंभ सुणी करहाली स्रणवतबीज दी।
रण विचि किनै न झाली दुरगा आँवदी।
बहुते बीर जटाली उठे आख कै।
चोटाँ पान तबाली जासन जुध नूं।
थरि थरि प्रिथमी चाली दलाँ चड़ंदिआँ।
नाउ जिवे है हाली सहुदरी आउ विचि।
धूड़ि उताहाँ घाली छड़ी तुरंगमाँ।
जाणि पुकारू चाली धरती इंद्र थै ॥44॥

॥ पउड़ी ॥

आहरि मिलिआ आहरीआँ सैण सूरिआँ साजी।
चले सउहे दुरगसाह जण काबै हाजी।
तीरी तेगी जमधड़ी रण वंडी भाजी।
इक घाइल घूमन सूरमे जण मकतब काजी।

॥ पउड़ी ॥

नगाड़ों पर चोटें पड़ रही हैं और मुक़ाबला जारी है। हाथों में नंगी कृपाणें नृत्य कर रही हैं और इन मांसप्रियाओं को शूरवीरों के तन में घुसेड़ा जा रहा है। घोड़ों और मर्दों पर ये कालरात्रि बन कर आई हैं। रक्त पीनेवाली योगिनियाँ दौड़ रही हैं। देवों द्वारा दानवों की भगाई सेना ने राजा शुंभ को जाकर सुनाया कि रक्तबीज के रक्त की बूँदे धरती पर नहीं गिरने दी गयीं और काली ने रक्तबीज के सभी रूपों को नष्ट कर डाला है। बहुत-से लोगों पर यह समय कालरात्रि के समान बीता है और शूरवीर इतने बेहाल हो गए हैं कि माताएँ अपने पुत्रों को भी नहीं पहचान पा रही हैं ॥43॥

॥ पउड़ी ॥

शुंभ ने रक्तबीज के अंत का हाल सुना और जाना कि युद्ध में दुर्गा के सम्मुख कोई नहीं टिक सका। उसी समय बहुत से जटाधारी वीर उठे और कहने लगे कि नगाड़ची नगाड़ों पर चोटें दें; हम युद्ध को जायेंगे। अब इस दल की चढ़ाई देखकर पृथ्वी भय से ऐसे थरथरा उठी जैसे विस्तृत नदी में छोटी-सी नाव काँप उठी हो। घोड़ों की चाल से धूल इस प्रकार ऊपर उड़ी है, मानो धरती स्वयं इंद्र के दरबार में पुकार करने चल दी हो ॥44॥

॥ पउड़ी ॥

लड़ाई का अवसर देख रहे सूरमाओं को एक अच्छा उद्यम का अवसर मिल गया और उन्होंने सेना को सुसज्जित किया। वे दुर्गा के सामने इस प्रकार झुंड के झुंड बनाकर चले मानो हाजी हज के लिए काबा को जा रहे हों। तीरों और तलवारों के माध्यम से रण में वीरों को निमन्त्रण दिया जा रहा है। शूरवीर घायल होकर ऐसे घूम रहे हैं मानो अपने स्थान पर लोकचिन्ता में डूबे क़ाजी परेशान घूम रहे हों। वीर

इक बीर परोते बरछीए जिउँ झुक पउन निवाजी।
इक दुरगा सउहे खुनसकै खुनसाइन ताजी।
इक धावन दुरगा सामने जिउँ भुखिआए पाजी।
कदे न रजे जुझ ते रज होए राजी ॥45॥

॥ पउड़ी ॥

बजे संगलीआले संघर डोहरे।
डहे जु खेत जटाले हाठाँ जोड़िकै।
नेजे बंबलीआले दिसन ओरड़े।
चले जाण जटाले नावण गंग नूं ॥46॥

॥ पउड़ी ॥

दुरगा अतै बानवी सूल होइआ कंगाँ।
वाछड़ घती सूरिआ विच खेत खतंगाँ।
धूलि क्रिपाणा तिक्खिीआँ बड लाहनि अंगाँ।
पहिला दलाँ मिलंदिआँ भेड़ पइआ निहंगाँ ॥47॥

॥ पउड़ी ॥

ओरड़ फउजाँ आईआँ बीर चड़े कंधारी।
सड़क मिआनो कढीआँ तिखीआँ तरवारी।
कड़क उठे रण मचिआ वडे हकांरी।
सिर धड़ बाहाँ गनले फुल जे है बाड़ी।
जापे कटे बाढीआँ रूख चंदनि आरी ॥48॥

॥ पउड़ी ॥

दुहाँ कँधाराँ मुहि जुड़े जा सट पई खरवार कउ।
तक तक कैबरि दुरगसाह तक मारे भले जुझार कउ।
पैदल मारे हाथीआँ सँग रथ गिरे असवार कउ।
सोहन संजा बागड़ा जणु लगे फुल अनार कउ।

बरछियों में पिरोये जाकर बरछियों को ऐसे झुका रहे हैं, जैसे पवन पेड़ की टहनियों को झुका देती हैं। कुछ दुर्गा के सामने क्रोधित होकर घोड़ों को दौड़ाकर भूखे भेड़ियों के समान दौड़ रहे हैं। ये ऐसे वीर थे, जो कभी भी रण से तृप्त नहीं हुए थे, परन्तु आज ये सब तृप्त हो रहे हैं ॥45॥

॥ पउड़ी ॥

युद्ध में ज़ंजीरों से बँधे नगाड़े बज उठे हैं और पीठ से पीठ जोड़कर जटाधारी दैत्य भिड़ रहे हैं। उनके हाथों में पताकाओंवाली बरछियाँ दिखाई दे रही हैं और वे ऐसे लग रहे हैं, मानो ऋषि गंगास्नान को जा रहे हों ॥46॥

॥ पउड़ी ॥

दुर्गा और दानवों की सेनाएँ एक दूसरे के सामने तीखे काँटों की तरह एक-दूसरे को चुभ रही हैं। शूरवीरों ने युद्धस्थल में बाण-वर्षा की है और कृपाणें म्यान से निकालकर शत्रुआं के अंगों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं। दलों के आपस में मिलते ही तलवारों से मार-काट प्रारम्भ हो गई ॥47॥

॥ पउड़ी ॥

इधर सेनाएँ आयीं और वृहद् एवं बलशाली वीरों ने चढ़ाई कर दी तथा खींचकर तलवारों को म्यानों से निकाल लिया। सभी क्रोधित हो उठे और इन अहंकारियों ने भीषण युद्ध प्रारम्भ कर दिया है। सिर, धड़ और भुजाएँ बगीचे में टूटे हुए फूलों के समान पड़ी हैं और शरीर ऐसे कटे पड़े हैं, मानो बढ़ई ने चंदन के वृक्षों को टुकड़े-टुकड़े कर काट फेंका हो ॥48॥

॥ पउड़ी ॥

जब नगाड़े पर चोट पड़ी तो दोनों दल भीषण रूप से भिड़ पड़े और दुर्गा ने लक्ष्य बाँधकर बड़े-बड़े जुझारू वीरों को बाण मारे। उसने पैदल, हाथी एवं रथियों को मार गिराया। लौह-कवचों में तीरों की नोकें ऐसी शोभायमान हो रही हैं, जैसे अनारों के पौधों मे लाल-लाल फूल लगे हों। दायें हाथ में तलवार पकड़कर, क्रोधित

गुसे आई कालका हथि सजे लै तरवार कउ।
एदूँ पारउ ओत पार हरिनाकसि कई हज़ार कउ।
जिण इका रही कँधार कउ। सद रहमत तेरे वार कउ॥49॥

॥ पउड़ी ॥

दुहाँ कँधाराँ मुहि जुड़े सट्ट पई जमधाण कउ।
तद खिंग नसुंभ नचाइआ डाल उपरि बरगसताण कउ।
फड़ी बिलंद मँगाइओस फुरमाइस करि मुलतान कउ।
गुसे आई साम्हणे रण अंदरि घतण घाण कउ।
अगै तेग वगाई दुरगसाह बढ सुंभन बही पलाण कउ।
रड़की जाइ कै धरत कउ बढ पाखर बढ किकाण कउ।
बीर पलाणो डिगिआ करि सिजदा सुंभ सुजाण कउ।
साबास सलोणे खाणकउ। सदा साबास तेरे ताण कउ।
तारीफाँ पान चबाण कउ। सद रहमत कैफाँ खाण कउ।
सद रहमत तुरे नचाण कउ ॥50॥

॥ पउड़ी ॥

दुरगा अते दानवी गहसंघरि कथे।
ओरड़ उठे सूरमे आ डाहे मथे।
कट तुफंगी कैबरी दल गाहि निकथे।
देखनि जंग फरेसते असमानो लथे ॥51॥

॥ पउड़ी ॥

दुहाँ कँधाराँ मुह जुड़े दल धुरे नगारे।
ओरड़ आए सूरमे सिरदार रणिआरे।
लै कै तेगाँ बरछिआँ हथियार उभारे।
टोप पटेला पाखराँ गलि संज सवारे।
लै के बरछी दुरगसाह बहु दानव मारे।
चड़े रथी गज घोड़िई मार भुइ ते डारे।
जण हलवाई सीख नाल विंन्ह वड़े उतारे ॥52॥

होकर कालिका आगे बढ़ी है और उसके ऐसें स्वरूप ने हिरण्यकशिपु के समान बड़े-बड़े कई हज़ार दैत्यों को मौत के घाट उतार दिया। अकेली दुर्गा ही सारी सेना को जीतती चली जा रही है। उसके भीषण प्रहारों को साधुवाद है ॥49॥

॥ पउड़ी ॥

फिर नगाड़े पर चोट पड़ी और दोनों सेनाएँ एक दूसरे से जूझ उठीं। तब निशुंभ ने घोड़े पर भी कवच पहनाकर उसे नचा दिया। मुल्तान नरेश को कहकर उसने एक बड़ा धनुष मँगाया। इधर युद्धस्थल लहू और चरबी के कीचड़ से भर देने के लिए दुर्गा आगे बढ़ी और उसने कृपाण खींचकर मारी जो निशुंभ-समेत घोड़े को काठी को काटती हुई एवं घोड़के कवच-समेत घोड़े को चीरती हुई धरती पर जा लगी (यहाँ 'नसुंभ' के स्थान पर कवि ने छंद की लय के प्रवाह को बनाए रखने के लिए 'सुंभन' लिखा है)। और निशुंभ शुंभ को प्रणाम करता हुआ धरती पर गिर पड़ा। निशुंभ की निर्भयता एवं वीरता को देखता हुआ कवि कहता है कि हे वीर ! तुम्हें भी शाबाश है, तेरे बल को भी शाबाश है। तुम्हारा अभय होकर पान चबाना भी तारीफ़ के लायक़ है। तुम्हारे बाण खाने को भी साधुवाद है और तुम्हारा घोड़े को अभय होकर नचाना भी तारीफ़ के काबिल है ॥50॥

॥ पउड़ी ॥

दुर्गा और दानवों ने घनघोर युद्ध किया और शूरवीर एक-दूसरे से आ भिड़े। तलवारों और तीरों से दलों का मंथन किया गया और इस युद्ध को देखने के लिए व्योममंडल के फ़रिश्ते भी चलकर पहुँचे ॥51॥

॥ पउड़ी ॥

नगाड़ों के बजने से दोनों ओर भी सेनाएँ और उत्तेजित होकर लड़ने लगीं और बड़े-बड़े शूरवीर युद्ध में शामिल हो गए। उन्होंने तलवारों, बरछों को पकड़कर उछाला और शरीरों पर शिरस्त्राण, कवच आदि भलीभाँति लगा लिये। दुर्गा ने अपनी बरछी से बहुत से दानवों को मारा और हाथी, घोड़ों पर चढ़नेवालों और पैदलों को नष्ट कर धराशायी कर दिया। बरछी से दुर्गा ने वीरों को ऐसे बींध दिया, जैसे लौह-शलाका को लेकर हलवाई पकौड़ों को बींधकर कड़ाही से बाहर निकालता है ॥52॥

॥ पउड़ी ॥

दुहाँ कँधाराँ मुहि जुड़े नाल धउसा भारी।
लई भगउती दुरगसाह वर जागन भारी।
लाई राजे सुंभ नो रतु पीऐ पिआरी।
सुंभ पलाणो डिगिआ उपमा बीचारी।
डुब रतू नालहू निकली बरछी दुधारी।
जाण रजादी उतरी पैन्ह सूही सारी ॥53॥

॥ पउड़ी ॥

दुरगा अते दानवी भेड़ पइआ सबाही।
ससत्र पजूते दुरगसाह गह सभनी बाही।
सुंभ निसुंभ सँघारिआ वथ जेहे साही।
फउजाँ राकसिआरीआँ देखि रोवनि धाही।
मोहि कुङूचे घाह दे छड घोड़े राही।
भजदे होए मारीअन मुड झाकन नाही ॥54॥

॥ पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ पठाइआ जम दे धाम नो।
इंदर सद बुलाइआ राज अभखेखनो।
सिर पर छत्र फिराइआ राजे इंद्र दै।
चउदह लोकाँ छाइआ जसु जगमात दा।
दुरगा पाठ बणाइआ सभे पउड़ीआँ।
फेर न जूनी आइआ जिन इह गाइआ ॥55॥

× × ×

॥ पउड़ी ॥

दोनों सेनाओं का आमने-सामने नगाड़ों की चोट पर युद्ध चल रहा है और दुर्गा ने वज्र के समान अग्नि फेंकनेवाली कृपाण को हाथ में पकड़कर उसे शुंभ का रक्त पिलाने के लिए शुंभ पर चला दिया है। वह प्रेमिका के समान शुंभ का रक्त पीने लगी और शुंभ घोड़े की काठी से गिरकर नीचे आ पड़ा। रक्तरंजित बरछी जब शुंभ के शरीर से बाहर निकली है, तो कवि ने यह उपमा दी है कि वह ऐसी लग रही है मानो राजकन्या लाल साड़ी पहनकर महल से बाहर निकली हो ॥53॥

॥ पउड़ी ॥

दुर्गा और दानवों का भीषण संग्राम हुआ और दुर्गा ने अपनी सभी भुजाओं में बड़े-बड़े शस्त्र पकड़े हुए हैं। देवी ने शुभ-निशुंभ जैसे बलियों को मार गिराया है और असुरों की सेना यह दृश्य देखकर भीषण चीत्कार एवं विलाप कर रही हैं। शस्त्रों को फेर मुँह में घास के तिनके पकड़कर अपनी हार मानकर घोड़ों को छोड़कर दैत्य भाग खड़े हुए हैं। उन भागे जाते हुओं को भी मार पड़ रही है और वे फिर पलटकर पीछे नहीं देखते ॥54॥

॥ पउड़ी ॥

देवी ने शुंभ और निशुंभ को यमपुरी भेजकर इंद्र को अभिषेक कर उसे राज देने के लिए बुलाया और उसके सिर पर छत्र धारण करवाया। इस प्रकार चौदह भुवनों में जगत्माता का यश व्याप्त हो गया। यह दुर्गा-पाठ सभी 'पउड़ी। छंदों में रचा गया है, जिसने भी इसका गायन किया है वह आवागमन से मुक्त हो गया है ॥55॥

× × ×